ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

स्वतंत्र भारत को गढ़ने में डॉ. मुखर्जी का अप्रतिम योगदान – कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, दि. 06 जुलाई 2021 : प्रख्यात शिक्षाविद डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 120वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि भारत की एकता और अखंडता

को स्थापित करने तथा स्वतंत्र भारत को गढ़ने में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का अप्रतिम योगदान रहा है. वे कटु यथार्थ को प्रकट करने वाले राजनेता थे.

विश्वविद्यालय में मंगलवार को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर 'सांस्कृतिक चेतना तथा राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता की प्रतिमूर्ति डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया. अपने बीज वक्तव्य और अध्यक्षीय उदबोधन में कुलपति प्रो. शुक्ल ने ऐतिहासिक और राजनैतिक संदर्भो की व्याख्या करते हुए कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने दो विधान की अवधारणा के विरोध में जनजागरण और संघर्ष कर अपना बलिदान दिया. आज की बिकट परिस्थिति में उन्हें याद करना प्रासंगिक और महत्वपूर्ण है. प्रो. शुक्ल ने धारा 370 का प्रावधान समाप्त करना और भारत के विभाजन को लेकर डॉ. मुखर्जी के विचारों पर सारगर्भित मंतव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में डॉ. मुखर्जी के शिक्षा संबंधी विचारों पर विशेष ध्यान दिया गया है।

कार्यक्रम में विशिष्ट वक्तव्य देते हुए मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपा शंकर चौबे ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी भारतीय भाषाओं के पक्षधर थे और उन्होंने भारतीय भाषाओं को न्याय दिलाने का काम किया. प्रो. चौबे ने धारा 370 को हटाने को लेकर डॉ. मुखर्जी के सपनों की दृष्टि पर विस्तार से प्रकाश डाला.

राष्ट्रीय संगोष्ठी का स्वागत वक्तव्य शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर ने दिया. उन्होंने कहा कि डॉ. मुखर्जी को याद करते समय शिक्षा के द्वारा मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना एवं

राष्ट्रीय एकता व अखंडता की भावना के विकास के लक्ष्य को अपनाकर कार्य करना वर्तमान समय की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पी कुमारी ने किया एवं तकनीकी समन्वय शिक्षा विभाग के सहायक प्रोफ़ेसर श्री अनिकेत आंबेकर ने किया तथा शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार ने धन्यवाद ज्ञापित किया. कार्यक्रम में प्रतिकुलपति द्वय प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल और प्रो. चंद्रकांत रागीट सहित अध्यापक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित रहे.

कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विद्या भवन में कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल द्वारा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्पांजलि अर्पित कर अभिवादन किया गया. इस अवसर पर प्रतिकुलपति प्रो. चंद्रकांत रागीट, शिक्षा विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृपा शंकर चौबे, शिक्षा विभाग के अध्यक्ष प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर सहित प्रो. चतुर्भुज नाथ तिवारी, डॉ. के. बालराजु आदि ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर पुष्पार्पण कर अभिवादन किया.

स्वतंत्र भारताच्या जडणघडणीत डॉ. मुखर्जी यांचे अप्रतिम योगदान – कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, दि. 06 जुलै 2021 : भारताची एकता व अखंडता स्थापण करणे तसेच स्वतंत्र भारताच्या जडणघडणीत डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी यांचे अप्रतिम योगदान राहिलेले आहे असे विचार महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाचे कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांनी व्यक्त केले.ते प्रख्यात शिक्षणतज्ज्ञ डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी यांच्या 120 व्या जयंती निमित्त आयोजित तरंगाधारित राष्ट्रीय चर्चासत्रात अध्यक्ष म्हणून बोलत होते. मंगळवारी (6 जुलै) 'सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता व अखंडतेची प्रतिमूर्ती डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी' या विषयावर कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला.

कुलगुरु प्रो. शुक्ल यांनी ऐतिहासिक व राजकीय संदर्भात बोलतांना डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी यांनी दोन विधानाची अवधारणा या विरोधात जनजागरण व संघर्ष करत बलिदान दिले. आजच्या बिकट परिस्थितीत त्यांचे स्मरण करणे प्रासंगिक तसेच महत्वपूर्ण आहे असे सांगितले प्रो. शुक्ल यांनी कलम 370 समाप्त करणे व भारताच्या विभाजनाविषयी डॉ. मुखर्जी यांच्या विचारावर सारगर्भित विचार मांडले. राष्ट्रीय शिक्षण धोरण 2020 मध्ये डॉ. मुखर्जी यांच्या शिक्षणा संबंधी विचारावर विशेष लक्ष देण्यात आले आहे असेही ते म्हणाले.

कार्यक्रमात विशिष्ट वक्ता म्हणून मानविकी व सामाजिक विज्ञान विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. कृपा शंकर चौबे म्हणाले की डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी हे भारतीय भाषांचे समर्थक होते. कलम 370 हटविण्यामागे डॉ. मुखर्जी यांची मोठी दूरदृष्टी होती

याप्रसंगी स्वागत शिक्षण विभागाचे अध्यक्ष प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर यांनी केले. डॉ. मुखर्जी यांचे स्मरण करतांना शिक्षणातून मानवीय मूल्य, सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रीय एकता व अखंडतेची भावना वृद्धिंगत करणे ही वर्तमान काळाची आवश्यकता आहे असे ते म्हणाले. कार्यक्रमाचे संचालन शिक्षण विभागाच्या सहायक प्रोफेसर डॉ. शिल्पी कुमारी यांनी केले तर तांत्रिक समन्वय शिक्षण विभागाचे सहायक प्रोफ़ेसर श्री अनिकेत आंबेकर यांनी केले आभार शिक्षण विद्यापीठाचे अधिष्ठाता प्रो. मनोज कुमार यांनी मानले. कार्यक्रमात प्रकुलगुरु द्वय प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल व प्रो. चंद्रकांत रागीट यांच्यासह अध्यापक, शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित होते.

कार्यक्रमाच्या प्रारंभी डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी विद्या भवनात कुलगुरु प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल यांनी डॉ. मुखर्जी यांच्या चित्रावर माल्यार्पण तसेच पुष्पांजली अर्पित करत अभिवादन केले. यावेळी प्रकुलगुरु प्रो. चंद्रकांत रागीट, प्रो. मनोज कुमार, प्रो. कृपा शंकर चौबे, प्रो. गोपाल कृष्ण ठाकुर, प्रो. चतुर्भुज नाथ तिवारी, डॉ. के. बालराजु यांनीही डॉ. मुखर्जी यांना अभिवादन केले.